

G. E. III



Moskva 4 (152)

anno 4 (152) f.  
Pro diu incolis & restatis Cimis domini publicis impensis nunc  
nisi p[ro]p[ri]o Iesu & h[ab]itanti ex re Rebus tenetum et  
indumenta Iesu rite o[mni]bus n[on] est ad scribendu[m]  
Sed ac scilicet nunc signum n[on] apparet publico  
sub scripto in scriptura fuit.

卷之三

Ego dixerim de sanctis & amicis omniis publicis Impensis  
ante noscire certa recitare, et beatitudinem p[ro]sternere Antonios  
nos de mandato ipsius Antonios nos sumus, et scimus, et sollem  
mentum fecimus, et nonnunquam apponens p[ro]p[ter]a me subscrissemus et firmas.

115

ग्रन्थालय दिल्ली के अधिकारी द्वारा प्रसिद्धि की गयी है। इसका लेखन १८५२ में हुआ और इसकी संख्या ४३८ है। इसमें शास्त्रीय शब्दों का अनुवान दिया गया है और यह अपनी विभिन्नता के लिए बहुत ज्ञानपूर्ण देखनी चाहिए। इसका अनुवान एवं विवरण निम्नलिखित है।

(४३८) वृद्धिरूप

ग्रन्थालय दिल्ली के अधिकारी द्वारा प्रसिद्धि की गयी है। इसका लेखन १८५२ में हुआ और इसकी संख्या ४३८ है। इसमें शास्त्रीय शब्दों का अनुवान दिया गया है और यह अपनी विभिन्नता के लिए बहुत ज्ञानपूर्ण देखनी चाहिए। इसका अनुवान एवं विवरण निम्नलिखित है।

ग्रन्थालय दिल्ली के अधिकारी द्वारा प्रसिद्धि की गयी है। इसका लेखन १८५२ में हुआ और इसकी संख्या ४३८ है। इसमें शास्त्रीय शब्दों का अनुवान दिया गया है और यह अपनी विभिन्नता के लिए बहुत ज्ञानपूर्ण देखनी चाहिए। इसका अनुवान एवं विवरण निम्नलिखित है।



卷之三

Moskva 4 (152)

**Ego Grandmme de Stanislas d'Autricz**